Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
October to December 2025, E-Journal, Vol. I, Issue LII (52), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

डिजिटल युग में जनजातीय सांस्कृतिक अभिव्यक्ति

डॉ. मनीषा सिंह मरकाम* शांता चौहान**

* सहा. प्राध्यापक (हिन्दी) प्रधानमंत्री कॉलेज ऑफ एक्सीलेस, श्री अटल बिहारी वाजपेयी, शा. कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, इंदौर (म.प्र.) भारत
** शोधार्थी (हिन्दी) प्रधानमंत्री कॉलेज ऑफ एक्सीलेस, श्री अटल बिहारी वाजपेयी, शा. कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, इंदौर (म.प्र.) भारत

शोध सारांश – इक्कीसवीं सदी को डिजिटल युग के रूप में जाना जाता है। डिजिटल युग वह समय है जिसमें कम्प्यूटर 'इन्टरनेट' स्मार्टफोन, सोशल मीडिया, डिजिटल प्लेटफार्म मानव जीवन के अभिन्न अंग बन गये है। इस युग में ज्ञान का संरक्षण, संप्रेषण और प्रचार डिजिटल माध्यमों के द्वारा तीव्र गति से होने लगा है। डिजिटल युग में सांस्कृतिक संरचना को बहुत ही गहराई से प्रभावित किया है। जनजातीय समाज जो परंपरागत रूप से मौखिक परंपरा, लोकगीत, लोकनृत्य, कला, पर्व, त्यौहार एवं प्रकृति जीवनशैली पर आधारित रहे है। आंरभ में जनजातीय समाज डिजिटल माध्यमों से दूर रहा है, किन्तु शिक्षा, संचार और सरकारी पहलों के माध्यम से धीरे–धीरे यह समुदाय डिजिटल दुनिया से जुडने लगा है और सांस्कृतिक अभिव्यक्ति के नये–नये रूप गढ़ रहे है। मोबाईल –इन्टरनेट, सोशल मीडिया के माध्यम से जनजातीय युवक –युवतियाँ अपनी सांस्कृतिक पहचान को बना रहे है।
शब्द कुंजी – डिजिटल युग, सोशल मीडिया, लोक परंपरा, सांस्कृतिक अभिव्यक्ति।

प्रस्तावना – डिजिटल युग में जनजातीय सांस्कृतिक अभिव्यक्ति की वास्तविक शुरूआत भारत में लगभग 1990 के दशक उतरार्ध से 2000 के बाद तक मानी जाती है। जब कम्प्यूटर, इन्टरनेट, मोबाईल, कैमरा जैसी तकनीके धीरे–धीरे ग्रामीण क्षेत्रों और आदिवासी अंचलों तक पहुँची विशेष रूप से 2010 के बाद स्मार्टफोन और सोषल मीडिया के प्रसार के साथ यह अभिव्यक्ति अधिक तेज और व्यापक हो गई और स्वयं जनजातीय समुदाय के युवा–पीढ़ी ने मोबाईल से वीडियों बनाने शुरू किये, लोक गीत रिकार्ड किये, पर्व त्यौहारों की तस्वीरे सांझा करने लगे इस प्रकार फेसबुक, युट्युब और व्हाट्सएप के माध्यम से अपनी संस्कृति को स्वयं प्रस्तुत किया।

डिजिटल युग में यह महसूस किया गया कि यदि जनजातीय कलाओं का डिजिटल दस्तावेजीकरण और ऑनलाईन मंच नही मिला तो युवा–पीढ़ी उनसे दूर हो जायेगी और कई कलाएँ विलुप्त होने की कगार पर पहुँच जायेगी। भारत में 700 से अधिक जनजातीयाँ है जिनमें लोककलाएँ, लोकनृत्य, लोकगीत, शिल्प, मौखिक परंपराए मुख्य रूप से है। जनजातीय संस्कृति भारतीय सभ्यता की मूल कला है। यह संस्कृति, प्रकृति, सामूहिकता, लोकज्ञान और आत्मीय संकेतो पर आधारित रही है। इसलिये इन कलाओं के संरक्षण के लिये डिजिटल तकनीक अपनी अहम भूमिका निभा रहा है। भारत की जनजातीय संस्कृति को सहेजने एवं वैश्विक मंच पर पहुँचाने के लिये जनजातीय कार्य मंत्रालय के जनजातीय कार्य राज्यमंत्री– दुर्गादास उइके ने 10 सितम्बर 2025 को 'भारत मंडपम' नई दिल्ली में आयोजित राष्ट्रीय सम्मेलन – **'आदि कर्म योगी' अभियान',** अभियान के अवसर पर दुनिया के पहले डिजिटल जनजातीय विष्वविद्यालय –'आदि संस्कृति' (Beta, Version) संग्रहालय का शुभारंम किया। यह एक डिजिटल अकादमी और ई–लर्निंग प्लेटफार्म है जो राष्ट्रीय और वैश्विक दर्शकों के लिये आदिवासी कला–संस्कृति, विषय और जानकारी के लिये एक आनलाइन बाजार है। यह सांस्कृतिक संरक्षण और आजीविका के अवसर सृजित करता है।

इस प्लेटफार्म के तीन प्रमुख घटक है–

1. **आदि संस्कृति –** (डिजिटल ट्राइबल आर्ट अकादमी) इसमें 45 पाठ्यक्रम है जिसमें – नृत्य, चित्रकला, शिल्प, संगीत और लोककलाओं से संबंधित है ।
2. **आदि संपदा –** (सामाजिक सांस्कृतिक भण्डार) –पॉच विषयों पर 5000 से अधिक संकलित दस्तावेजो का संग्रह जिसमें चित्रकला, नृत्य, वस्त्र, कलाकृतियाँ आजीविका शामिल है।
3. **आदि हाट –** (आनलाइन बाजार) – आदिवासी कारीगरों के लिय स्थायी आजीविका है।

शोधकर्ता और लोक साहित्यकारों ने जनजातीय गीत, नृत्य, मिथक रीति–रिवाजों का डिजिटल दस्तावेजीकरण किया। विश्वविद्यालयों और शोध संस्थानों ने ई–जर्नल, डिजिटल आकाईन के माध्यम से इन्हें सांझा किया । भारत सरकार की योजनाए– डिजिटल इंडिया, जनजातीय गौरव अभियान, संस्कृति मंत्रालय, आदिवासी विभाग, NGO द्वारा डाक्युमेन्ट्री फिल्मे, डिजिटल संग्रहालय से प्रस्तुत, आनलाईन भी तैयार की गई। इससे जनजातीय संस्कृति की पहचान अलग ही रूप से जानी जाने लगी है।

युट्युब चैनल, इंस्टाग्राम, रील्स, ब्लॉग्स में जनजातीय नृत्य, वेशभुषा, प्रकृति –पूजा, पारंपरिक रीति –रिवाज, लोक परंपरा और लोक कथाओं को वैश्विक मंच प्रदान किया है, जो संस्कृति पहले सीमित क्षेत्र तक थी, अब वह विश्व मंच पर पहुँच रही है।

डिजिटल मंच जनजातीय युवाओं को अपनी संस्कृति को अपने शब्दों और दृष्टिकोण से प्रस्तुत करने का अवसर देता है। विभिन्न संस्कृतियों के बीच संवाद को बढ़ावा देता है। जिसमें जनजातीय संस्कृति के प्रति सम्मान

और समझ विकसित होती है।

डिजिटल युग जनजातीय सांस्कृतिक अभिव्यक्ति के लिये वरदान और चुनौती दोनों है।

वरदान–यदि तकनीक का उपयोग संवेदनशीलता और सांस्कृतिक चेतना के साथ किया जाये तो वह जनजातीय संस्कृति के संरक्षण, संवर्धन और वैश्विक पहचान का सशक्त माध्यम बन सकती है।

चुनौति– डिजिटल लोकप्रियता की दौड़ में कई बार जनजातीय परंपराओं को तोड–मरोड़कर प्रस्तुत किया जाता है इससे संस्कृति की आत्मा कमजोर होती है और वह केवल 'मनोरंजन सामग्री' बन कर रह जाती है, और कई बार बाहरी लोग जनजातीय कला और ज्ञान को बिना अनुमति या श्रेय के डिजिटल मंचो पर प्रस्तुत कर देते है, जिससे सांस्कृतिक शोषण होता है। इसलिए आवश्यक है कि परंपरा और तकनीक के बीच संतुलन स्थापित किया जाए।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. वर्मा कुमार – भारतीय जनजातीय संस्कृति और लोक जीवन –नई दिल्ली – राज प्रकाशक।
2. सिंह के. एस 'tribal culture and development in India' नई दिल्ली : आक्सफोर्ड युनिवर्सिटी प्रेस।
3. त्रिपाठी सविता – आदिवासी लोक कला और वैश्विकरण। इन्दौर – आदित्य प्रकाशन।
4. जनजातीय कार्य मंत्रालय,भारत सरकार – मध्य प्रदेश की जनजातीयाँ।

****